रात्रीक्लास 24.2.68– बाप ने समझाया है ऐसी प्रैक्टिस करो । देखते भी हैं ,बात–चीत भी करते हैं। बुद्धि बाप तरफ है। पुरानी दुनियां यह खतम हो जानी है। इस दुनियां को छोड़कर हमको घर जाना है। यह खयालात और कोई की बुद्धि में नहीं होगा। और कोई यह नहीं समझते हैं। वह तो समझते हैं दुनियां अजन है। तुम तो जानते हो हम अपनी राजाई में जा रहे हैं। राजयोग सिखा रहे हैं। थोड़े समय अमरपुरी वा नई दुनियां सतयुग जाय पहुंचेंगे। तुम अभी बदल रहे हो। आसुरी मनुष्य से बदल दैवी मनुष्य बन रहे हो। बाबा मनुष्य से देवता बना रहे हैं।देवताओं में गुण होते हैं। वह भी हैं मनुष्य ;परंतु उनमें दैवी गुण है। यहां आसुरी गुण है। तुम जानते हो आसुरी रावण राज्य फिर न रहेगा। हम दैवी गुण भी धारण कर रहे हैं । बाप की योगबल से पाप भी भस्म कर रहे हैं। करते हो वा नहीं सो तो हरेक अपने को जाने। अपनी गति का तो समझ सकते हैं ना। हरेक को अपन को दुर्गति से सदगति में लाना है अर्थात् सतयुग में जाने का पुरुषार्थ करना है। सतयुग है विश्व की बादशाही। एक ही राज्य होता है। यह है विश्व के महाराजन..... है ना। दुनियां को यह पता नहीं है। पहले वर्ष से इनकी राजाई शुरू होती है। तुम जानते हो हम यह बन रहे हैं। बाप अपने से भी बच्चों को उंच ले जाते हैं। इसलिए बाबा नमस्ते करते हैं। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा ,ज्ञान सितारे। तुंम लक्की हो। समझते हो बाबा नमस्ते बिल्कुल राईट अर्थ से करते हैं। बाप आकर बहुत सुख घनेरे देते हैं। यहां तो सुख

है नहीं। सब गालियां देते रहते हैं। तुमने अभी बाप को जाना है तो उनको कब गालियां दे न सकेंगे। यह गालियां भी वंडरफुल है। तुम्हारी राजाई भी वंडरफुल है। तुम्हारी आत्मा भी वंडरफुल है। इतना सारा रचता और रचना की नालेज तुम्हारी बुद्धि में है। तुमको आप समान बनाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। है कल्प पहले वाली तकदीर। पुरुषार्थ तो बाप कराते रहते हैं। यह नहीं कह सकते हैं कौन आठ रत्न बनेंगे। यह खुद भी नहीं बता सकते हैं। बताने का पार्ट ही नहीं है। आगे चलकर तुम अपने पार्ट को जान जावेंगे। जैसा जो पुरुषार्थ करेंगे अपना भाग्य बनावेंगे। बाप है रास्ता बताने वाला। जितना जो उस पर चलेंगे। इनको तो सूक्ष्मवतन में देखते ही हैं। इन्हों का तो पक्का ही है। प्रजापिता ब्रह्मा साथ में बैठा है ना। ब्रह्मा से विष्णु बनन सेकेंड का काम है। विष्णु से ब्रह्मा बनने में 5000वर्ष लगते हैं।बुद्धि से लगता है बात बरोबर ठीक है। त्रिमूर्ति बनाते हैं ब्रह्मा, विष्णु ,शंकर है ;परंतु यह कोई समझते नहीं होंगे। यह अभी तुम बच्चे समझते हो।तुम कितना पदमभाग्यशाली बच्चे हो। पैर में पदम देवताओं को दिखाते हैं ना। पदमपति नाम भी बाला है। पदमपति बनते भी गरीब साधारण ही है। करोड़पति तो कोई आते नहीं। 5/7लाख वाले को साधारण कहेंगे। इस समय 20/40 हजार तो क्या है। पदमपति कोई है तो एक जन्म के लिए। थोड़ा सा ज्ञान लेंगे। सब कुछ स्वाहा तो कर न सके। सब कुछ स्वाहा किया जो पहले आये। फट से सबका पैसा काम में लग गया। गरीबों को तो लग जाता है ना। शाहुकारों को कहा जाता है सर्विस करो। ईश्वरीय सर्विस करनी है तो सेंटर खोलो। मेहनत भी करो। दैवी गुण भी धारण करो। बाप अपने को गरीब निवाज कहलाते हैं। भारत सबसे गरीब है ना। भारत की ही सबसे जास्ती आदमसुमारी है ;क्योंकि शुरू में आये हैं ना। जो गोल्डेन एज में थे वही आयरन एज में आ गए हैं। एकदम गरीब बन पड़ते हैं। खर्चा कर सब खतम कर दिया है। बाप समझाते हैं अभी तुम फिर से देवता बन रहे हो। निराकारी गॉड तो एक ही है। बलिहारी है एक...की। दूसरों को समझाने लिए तुम कितनी मेहनत करते हो।चित्र बनाते रहते हो। बनते जावेंगे। ट्रांसलाइट के भी बहुत बड़े2 चित्र बन जावेंगे। एक दिन बन जावेंगे। बहुत अच्छी रीत समझते जावेंगे। ....की टिक2 तो चलती रहती है। इस ड्रामा के टिक2 को तुम ही जानते हो। सारी दुनियां की एक हूबहू कल्प पहले मिसल रिपीट हो रही है। सेकेंड व सेकेंड चलती रहती है। बाप यह सब बातें समझाते फिर भी कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करो। कोई पानी से ,कोई आग से पार हो जाते हैं। फायदा क्या? आयु कोई बड़ी होती नहीं। यह तो बुद्धि में है आठ/दस वप्र में यह पुरानी दुनियां होगी ही नहीं। हमको तो याद करना है शांतिधाम –सुखधाम को। मनमनाभव का

अर्थ यही है। शांतिधाम–सुखधाम को याद करे तो जरूर खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी होती है धन में। तुमको गुप्त धन मिलता है। अभी दुःख का समय बहुत थोड़ा है। यह ज्ञान गुप्त अंदर का है जिससे खुशी होती है। बाप द्वारा सुख का ही वर्सा मिलता है। रावण के राज्य में है 5विकार। उसमें ही विकार। विकारी–निर्विकारी, पतित–पावन का यह खेल है। बुद्धि भी कहती है पावन बनते हैं बाकी सभी शांतिधाम में रहते हैं। सब शांतिधाम और सुखधाम हो जाती है। तो बाप कहते हैं ऐसा कर्म न करो जिससे पाप बन जाये। अच्छा ,गुडनाइट। बाप कहते हैं बाकी समय अभी थोड़ा है। बहुत गई थोड़ी रही.....बाकी ....ही कितने हैं। कोई बच्चा पैदा कर लेंगे ;लेकिन वह तो वार्स (वारिस) बनेगा नहीं। सब मर जावेंगे। .....सब मिट्टी में मिल जानी है। सब दब जावेंगे। फिर नई दुनियां में सब खानियां भरतू हो जावेंगी। अभी तो देखो अनाज ही नहीं मिलता है। भल कहते हैं बहुत अनाज होगा ,यह होगा। अच्छा भावी ऐसे है फिर .....में बरसात पड़ती है। तो खेल ही खलास। इसलिए कोई बात में विश्वास नहीं रख सकते। ओम।